भा. कृ. अनु. प.- केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, भरूच

अनुसूचित जाति के कृषकों के लिए समनी फार्म पर "प्रक्षेत्र परिक्षण" प्रदर्शन, दिनांक 29 फरवरी, 2024

भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् के केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, भरूच द्वारा भारत सरकार की अनुसूचित जाति उपयोजना के अंतर्गत अनुसूचित जाति के कृषकों के लिए संस्थान के प्रायोगिक, समनी फार्म पर "प्रक्षेत्र परिक्षण" (On Farm Trial) प्रदर्शन आयोजित कराया गया| इस कार्यक्रम में नाहयेर, रोंध, कुरचन, अनोर, समनी, केसलू, घमनाद, तंछा, कारेला इत्यादी गाँव के 18 किसानों ने भाग लिया| किसानों को सर्वप्रथम संस्थान के बारे में जानकारी दी गयी कि क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, भरूच बारा क्षेत्र की काली लवणीय मृदा, फसल तथा पानी के प्रबंधन के क्षेत्र में अनुसंधान करता है। इस क्षेत्र की समस्यायों को देखते हुए विभिन्न प्रकार के प्रायोगिक अनुसंधान जैसे गेंहू में सोलर संचालित सिंचाई, गेंहू तथा सरसों की विविध किस्मों का मूल्यांकन का कार्य समनी फार्म पर चल रह हैं और इनकी विस्तृत रूप से जानकारी इस प्रक्षेत्र परिक्षण में दी गई|

काली मृदाओं में जमीन के फटने की समस्या बहुतायत पायी जाती है, जिसके निवारण के लिए विभिन्न कृषि तथा अन्य अवशेषों की मृदा के ऊपर परत बिछाकर अनुसंधान किया जा रहा है, जिसका संक्षिप्त विवरण किसानों को दिया गया| इस क्षेत्र के कुछ तालुका में अच्छे पानी की अनुपलब्धता है जिसकी वजह से रबी के मौसम में कृषि में बाधायें आतीं है और किसान फसल से अच्छा उत्पादन नहीं ले पाते हैं| इन समस्यायों के समाधान के लिए संस्थान के समनी फार्म पर अनुसूचित जाति उपयोजना के अनुदेय से सोलर से चलने वाली टपक (drip) तथा फव्वारा (sprinkler) सिंचाई का तंत्र भी लगाया गया है | इस तंत्र के विभिन्न पहलू जैसे सिंचाई प्रणाली, फिल्ट्रैशन यूनिट, पम्प तथा सोलर सिस्टम के बारे में किसानों को विस्तृत जानकारी दी गयी| इस समय इस प्रक्षेत्र में गेहूँ की लवण सहनशील किस्म KRL- 210 का प्रयोग लगाया गया है| एक अन्य परियोजना के तहत संस्थान में विकसित सरसों की विभिन्न लवण सहनशील किस्मों का भी यहाँ परिक्षण चल रहा है| सरसों को इस क्षेत्र में उगाने के लिए सही समय तथा उर्वरकों की सही मात्रा के बारे में पता लगाने के लिए भी परिक्षण किये जा रहे हैं, जिसके बारे में किसानों को विस्तृत जानकारी दी गयी| भारत के विविध क्षेत्रों से लाई गेहूँ तथा मक्का की किस्मों के लवणीय काली मृदाओं में मूल्यांकन के ट्राइल्स के बारे में भी किसानों को अवगत कराया गया। अत्यधिक मूल्यवान फसल क्विनोआ का भी इन क्षेत्रों में उगाने के लिए चल रहे परिक्षण के बारे में किसानों को जानकारी दी गयी| कई किसानों ने इस फसल के प्रति अपना रुझान दिखाया| इस कार्यक्रम के आयोजन में संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. मोनिका शुक्ला, डॉ. डेविड कैमस तथा डॉ. सागर विभुते, केन्द्र के अध्यक्ष डॉ. अनिल चिंचमलातपुरे तथा वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी अक्षय कुमार, तकनीकी अधिकारी चंपाभाई ताविआड तथा बलवंतसिंह डामोर ने भरपूर योगदान दिया।

के समग्री प्रायोगिक प्रक्षेत्र पर विभिन्न वैज्ञानिक
प्रक्षेत्र परिक्षण (On Farm Trial)